Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:10(5), October, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

उत्तराखंड में 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में उमराव सिंह गूर्जर का योगदान एक ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ. सुशील भाटी

सहायक प्रोफेसर, इतिहास विभाग,

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लक्सर, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

शोध सारांश:

वर्तमान शोध-पत्र में 1857 के भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में हरिद्वार क्षेत्र के वीर सेनानी राजा उमराव सिंह गूजर की भूमिका का विश्लेषण किया गया है। यह विद्रोह केवल सैनिक असंतोष का परिणाम नहीं था, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक असमानताओं के विरुद्ध एक व्यापक जनआंदोलन था। उत्तराखण्ड क्षेत्र, जो उस समय ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के अधीन सहारनपुर जनपद का हिस्सा था, वहाँ भी स्वतंत्रता की चेतना तीव्र रूप से उभर रही थी। मानिकपुर (आदमपुर मानकपुर) के निवासी उमराव सिंह गूजर ने इस क्षेत्र में ब्रिटिश सत्ता को चुनौती देते हुए स्थानीय किसानों, विशेषकर गूजर समुदाय को संगठित किया। उन्होंने "अंग्रेज़ों को मालगुज़ारी मत दो" का नारा देते हुए जनता को विद्रोह के लिए प्रेरित किया। vउमराव सिंह ने स्वयं को राजा घोषित कर क्षेत्र में स्वतंत्र शासन की नींव रखी। उनके नेतृत्व में मंगलौर, लंढोरा और सहारनपुर के बीच फैले ग्रामीण अंचल में ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध सशस्त्र प्रतिरोध प्रारंभ हुआ। उन्होंने ब्रिटिश आपूर्ति मार्गों को बाधित कर प्रशासन को गंभीर संकट में डाल दिया। 30 मई 1857 को अंग्रेज़ों ने मानिकपुर पर आक्रमण कर विद्रोह को कुचलने का प्रयास किया, परंतु उमराव सिंह बहादुरी से संघर्ष करते रहे। अंततः वे पकड़ लिए गए और अंग्रेज़ों ने उन्हें फाँसी पर चढ़ा दिया। यह शोध सिद्ध करता है कि 1857 का संग्राम केवल दिल्ली, कानपुर और लखनऊ जैसे केंद्रों तक सीमित नहीं था, बल्कि हरिद्वार जैसे ग्रामीण क्षेत्रों में भी स्थानीय वीरों ने स्वतंत्रता के लिए अपने प्राण न्योछावर किए। उमराव सिंह गूजर का बलिदान उत्तर भारत में ग्रामीण नेतृत्व के उस स्वरूप को उजागर करता है, जिसने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की जड़ों को सुदृढ़ बनाया।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:10(5), October, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

पृष्ठभूमि:

1857 का विद्रोह, जिसे भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम या भारतीय विद्रोह के नाम से भी जाना जाता है, ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ भारतीय सैनिकों और जनता का एक बड़ा विद्रोह था। यह विद्रोह उत्तर भारत में मुख्य रूप से मेरठ, बुलंदशहर, दिल्ली, कानपुर, लखनऊ, झाँसी और अन्य स्थानों पर केंद्रित था, लेकिन उत्तराखण्ड जैसे क्षेत्रीय इलाकों में भी इसका प्रभाव पड़ा था। उत्तराखण्ड, जो उस समय उत्तर पश्चिमी प्रांत (उत्तर प्रदेश का हिस्सा) का भाग था, में भी 1857 के विद्रोह का प्रभाव पड़ा। यहाँ पर भी कुछ महत्वपूर्ण घटनाएँ और संघर्ष हुए थे। उत्तराखण्ड का अधिकांश हिस्सा ब्रिटिश शासन के अधीन था। ब्रिटिशों ने 1815 में सुगौली संधि के तहत गढ़वाल और कुमाऊँ को नेपाल से छीन लिया और अपने अधीन कर लिया। इस प्रकार वर्तमान गढ़वाल और कुमाऊँ 19वीं सदी में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी का हिस्सा बन गए। उत्तराखण्ड का वर्तमान हरिद्वार जनपद तब ऊपरी दोआब का हिस्सा था, जो मुग़ल प्रशासन के अंतर्गत दिल्ली सूबे की सहारनपुर सरकार का भाग था। हरिद्वार-सहारनपुर क्षेत्र में राजा रामदयाल राजनीतिक रूप से सर्वाधिक प्रभावशाली व्यक्ति थे। मुग़ल साम्राज्य के अंतर्गत राजा रामदयाल के पास 804 गाँव की मुक़र्रदारी रियासत थी।

मुग़लों के बाद उत्तर भारत में जब मराठों का उत्कर्ष हुआ, तब 1803 तक हरिद्वार क्षेत्र मराठों के कब्ज़े में रहा। 1803 में मराठे ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी से पराजित हो गए। ग्वालियर के सिंधियाओं के साथ हुई सुर्जी अर्जुन गाँव की संधि के अंतर्गत हरिद्वार क्षेत्र सहित ऊपरी दोआब ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को प्राप्त हो गया। ऊपरी दोआब के प्रशासनिक पुनर्गठन करते हुए कंपनी ने हरिद्वार को सहारनपुर ज़िले में सम्मिलित कर दिया।

वाटसन द्वारा लिखित Dehradun District Gazetteer के पृष्ठ 189 के अनुसार, 1815 में सुगौली की संधि के बाद कंपनी प्रशासन ने 1817 से 1825 तक देहरादून को भी सहारनपुर जनपद का हिस्सा बना दिया था। उक्त अवधि में हरिद्वार और देहरादून सहारनपुर के अंतर्गत आते थे। इस प्रकार 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के समय उत्तराखण्ड का हरिद्वार जनपद सहारनपुर का हिस्सा था। उत्तराखण्ड के निवासी, जो मुख्य रूप से कृषि पर निर्भर थे, ब्रिटिश शासन की ज़मींदारी व्यवस्था, लगान और करों के बोझ तले दबे हुए थे। इन कारणों से लोकविरोधी भावना विकसित हो गई थी। ब्रिटिश शासन ने मिशनरी कार्य के माध्यम से धर्म परिवर्तन और ईसाई धर्म के प्रचार को बढ़ावा दिया, जिससे स्थानीय हिंदू और अन्य धार्मिक समुदायों के बीच असंतोष पैदा हुआ। स्थानीय लोग अपनी सांस्कृतिक पहचान और धार्मिक परंपराओं को बनाए रखने के लिए ब्रिटिश प्रशासन के खिलाफ उठ खड़े हुए।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:10(5), October, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

हरिद्वार जनपद में उमराव सिंह गूजर का विद्रोह:

1857 का स्वतंत्रता संग्राम भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण मोड़ था। यह विद्रोह केवल सैनिकों द्वारा नहीं, बल्कि समाज के विभिन्न वर्गों द्वारा ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ किया गया था। उमराव सिंह मानिकपुर आदमपुर गाँव के निवासी थे, यह गाँव मंगलौर के निकट हरिद्वार जनपद में स्थित है। उमराव सिंह गूजर 1857 के विद्रोह के एक प्रमुख स्थानीय नेता थे, जिन्होंने इस विद्रोह में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका संघर्ष ब्रिटिश शासन के खिलाफ था, और उनका नेतृत्व साहस तथा स्वतंत्रता की भावना का प्रतीक बन गया। उमराव सिंह के पिता फतेह सिंह भी इस विद्रोह में सक्रिय योगदान कर रहे थे। जैसा कि कहा जा चुका है कि गंगा-यमुना का समस्त ऊपरी दोआब और गढ़वाल-कुमाऊँ के क्षेत्र 1857 के विद्रोह के समय ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के अधीन थे। ब्रिटिश शासन के दौरान इन क्षेत्रों में स्थानीय निवासियों, खासकर किसानों और सैनिकों का अत्यधिक शोषण हो रहा था। ब्रिटिश द्वारा लागू किए गए कठोर करों, भूमि करों और सैनिकों की भर्ती के कारण जनता में असंतोष था।

उमराव सिंह के ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के राज के विरुद्ध हुए इस विद्रोह को समझने के लिए हमें समकालीन सहारनपुर-हरिद्वार क्षेत्र की भू-राजनीतिक परिस्थितियों का अवलोकन करना होगा, क्योंकि इस विद्रोह का कारण मात्र कृषक असंतोष नहीं था, बल्कि इसके अतिरिक्त क्षेत्रीय रूप से प्रभुत्वशाली गूजर जाति की राजनीतिक महत्वाकांक्षा भी थी। 1857 के विद्रोह के समय हरिद्वार क्षेत्र सहारनपुर जनपद में आता था। नेविल द्वारा लिखित Saharanpur District Gazetteer के पृष्ठ संख्या 101 के अनुसार पहले सहारनपुर ज़िले के एक बड़े भाग को गुजरात कहा जाता था, और ज़िले में गूजर सबसे बड़े भूमिपति थे। वर्तमान हरिद्वार जनपद में स्थित लंढोरा रियासत के राजा भी गूजर थे। वह लिखता है —

"In former days a large part of Saharanpur was commonly known as Gujarat, and at the present time three divisions of the area are generally recognised... the central portion (division) Gujarat, comprising the parganas of Gangoh, Rampur and Nakur, as well as the neighbouring tracts of Muzaffarnagar."

वह आगे लिखता है —

"The Gujars are the largest proprietors in the district, their holdings including the great Landhaura estate."

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:10(5), October, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

एरिक स्टोक्स द्वारा लिखित **Peasant Armed** पुस्तक के पृष्ठ संख्या **199** के अनुसार, इस **"Gujarat"** में मुज़फ्फरनगर ज़िले के कैराना और झिंझाना परगना सम्मिलित थे। **1813** में लंढोरा के राजा रामदयाल गूजर का निधन हो गया। अंग्रेजों ने राजपरिवार के सदस्यों में विवाद का लाभ उठाकर रियासत को कई ताल्लुकों में बाँट दिया और रियासत का बड़ा भाग अपने पास रख लिया। इस कारण क्षेत्रीय गूजरों में अंग्रेजी शासन के प्रति राजनीतिक असंतोष था। इसी कारण से हरिद्वार क्षेत्र में पूर्व में **1824** में भी ईस्ट इंडिया कंपनी के विरुद्ध विद्रोह हो चुका था। विद्रोह का नेतृत्व कलुआ गूजर और राजा विजय सिंह गूजर ने किया था। राजा विजय सिंह लंढोरा रियासत के कुंजा बहादुरपुर ताल्लुके के ताल्लुकेदार थे। इतिहास में यह विद्रोह "गूजर विद्रोह" के नाम से जाना जाता है। आरंभ में यह विद्रोह कलुआ गूजर के नेतृत्व में उत्तराखण्ड में गढ़वाल और कुमाऊँ की तराई में फैला हुआ था, परंतु विद्रोह के अंतिम दौर में कुंजा का किला इसका केंद्र बन गया था। कुंजा गाँव रूड़की के पास हरिद्वार जनपद में ही स्थित है। अंग्रेजों ने गोरखों की सिरमौर बटालियन की मदद से इस विद्रोह को कुचल दिया था। कुछ इतिहासकार इस विद्रोह को **1857** के विद्रोह का पूर्वाभ्यास भी कहते हैं। उत्तराखण्ड सरकार ने भी इस विद्रोह के ऐतिहासिक महत्व को समझते हुए हरिद्वार जनपद के कुंजा गाँव में कलुआ गूजर और राजा विजय सिंह का भव्य स्मारक बनवाया है। **1857** के विद्रोह में इस प्रकार क्षेत्रीय गूजर भूमिपतियों ने उमराव सिंह गूजर की अगुवाई में पुन: अपनी राजनीतिक सत्ता प्राप्त करने का प्रयास किया। सहारनपुर में बूढ़ाखेड़ी के फतुआ गूजर ने स्वयं को राजा घोषित किया था।

10 मई **1857** को मेरठ में देशी सैनिकों और धन सिंह कोतवाल सहित मेरठ की पुलिस ने अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह का बिगुल बजा दिया था। उसके बाद विद्रोह की लहर देशी सैनिकों और आम जनता में फैलती चली गई। **1857** के विद्रोह में हरिद्वार क्षेत्र के मानिकपुर गाँव ने ईस्ट इंडिया कंपनी के विरुद्ध गूजर विद्रोह का केंद्र बनकर उभरा, और उमराव सिंह ने उसका नेतृत्व किया। उन्होंने स्थानीय गूजर किसानों को ब्रिटिश शासन के खिलाफ एकजुट किया और ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकने का आह्वान किया। उमराव सिंह गूजर ने क्षेत्र को स्वतंत्र कर स्वयं को राजा घोषित किया। उन्होंने अपने राज्य को स्थिर करने के लिए राजाज्ञाएँ जारी करनी आरंभ कर दीं। आज़ादी के इस संघर्ष में हरिद्वार क्षेत्र में "मारो फिरंगी को" का नारा गूंज उठा। हर तरफ यही उद्घोष था —

"अंग्रेजों को मालगुज़ारी मत दो, थाने-तहसील को आग के हवाले कर दो, एकजुट होकर अपना राज वापस ले आओ।"

इस बदलते माहौल का व्यापक असर क्षेत्र पर होने लगा। राजा उमराव सिंह का राज्य स्थिर होने लगा और क्षेत्र से उन्हें मालगुज़ारी तथा लगान मिलने लगा। इस घटनाक्रम की जानकारी मिलने पर अंग्रेज अधिकारी चकित रह गए। उमराव सिंह ने युद्ध की रणनीति अपनाई और **22** मई को मंगलौर पर हमला कर दिया। उन्होंने सार्वजनिक रूप से ब्रिटिश अधिकारियों को चुनौती देना शुरू किया।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:10(5), October, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

एरिक स्टोक्स के अनुसार —

"Gathering of 200 Gujars intent on attacking Manglaur (south of Rurki) on 22 (June) May, and the setting up of Umrao Singh as raja at Manikpur (modern Adampur Manakpur, seven miles west of Rurki), where he became 'the leader of all the disaffected Goojurs in the Pergunnah.'"

उन्होंने सहारनपुर के आसपास के क्षेत्रों में ब्रिटिश सेना के आपूर्ति मार्गों को बाधित किया और ब्रिटिश सरकार के बुनियादी ढाँचे को नुकसान पहुँचाया।

ब्रिटिश सेना ने विद्रोहियों के खिलाफ अपनी कार्रवाई तेज कर दी। उमराव सिंह को पकड़ने अथवा मारने के प्रयास बढ़ गए। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए सहारनपुर का जिला मजिस्ट्रेट स्पैंकी सेना लेकर मंगलौर पहुँच गया। जॉइंट मजिस्ट्रेट रॉबर्टसन भी अपनी सेना लेकर उससे मंगलौर में आ मिला। 30 मई 1857 को जिले भर की समस्त अंग्रेजी सेना ने मंगलौर को आधार बनाकर मानिकपुर पर हमला कर दिया।

उमराव सिंह की स्थानीय गुप्तचर व्यवस्था काफी अच्छी थी; संभवत: उन्हें अंग्रेजों के आक्रमण की पूर्व में ही सूचना मिल गई थी। विद्रोहियों के संख्याबल और संसाधनों की कमी के कारण ब्रिटिश शासन ने मानिकपुर में विद्रोह को कुचल दिया। किन्तु अंग्रेज उमराव सिंह को गिरफ्तार नहीं कर सके, परंतु उनके कई साथी विद्रोही पकड़ लिए गए और उन्हें कठोर दंड दिया गया। अंग्रेजों ने विद्रोह में शामिल होने वाले सभी आस-पास के गाँवों को सामूहिक सजा दी। अंग्रेजों ने मानिकपुर और आसपास के कई गाँवों को आग में जला कर ख़ाक कर दिया तथा विद्रोही नेताओं को फाँसी दी गई। 1981 में प्रकाशित Saharanpur District Gazetteer के पृष्ठ संख्या 64 पर इस ऐतिहासिक घटना का विवरण इस प्रकार दिया गया है —

"On the 30th of May, Spankie, joined by Robertson and his force, went to Manglaur in order to make a raid on Manakpur, then held by one Umrao Singh; who had set himself up as raja and was levying contributions from the villagers. The village was taken and burned, but an attempt to capture Umrao Singh failed as he and his followers succeeded in effecting their escape."

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:10(5), October, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

अंग्रेजों ने राजा उमराव सिंह को गिरफ्तार करने की हर संभव कोशिश की, मगर वे कामयाब नहीं हो पाए। जब उन्हें किसी भी प्रकार सफलता नहीं मिली, तब अंग्रेजों ने एक क्षेत्रीय ज़मींदार — जो राजा उमराव सिंह के रिश्तेदार थे — की मदद से उन्हें सहारनपुर के निकट सीडकी गाँव से गिरफ्तार कर लिया और फाँसी दे दी गई। उमराव सिंह का नाम इतिहास में उतना प्रसिद्ध नहीं है जितना अन्य प्रमुख विद्रोही नेताओं का, लेकिन उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण था। उन्होंने आसपास के इलाकों में ब्रिटिश शासन के खिलाफ एक मजबूत प्रतिरोध खड़ा किया, और उनकी भूमिका को याद किया जाना चाहिए।

उमराव सिंह का नाम स्थानीय प्रतिरोध का प्रतीक बन गया। आगामी पीढ़ियों के लिए वे प्रेरणा का स्रोत बन गए। उनके संघर्ष ने यह सिद्ध किया कि ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ हर स्तर पर संघर्ष किया जा सकता है, चाहे वह स्थानीय स्तर पर ही क्यों न हो। उनका विद्रोह न केवल ब्रिटिश शासन के खिलाफ था, बल्कि यह उस समय की भारतीय जनता की आज़ादी की आकांक्षाओं का प्रतीक था। हालाँकि उनका संघर्ष ब्रिटिश सेना द्वारा दबा दिया गया, परंतु उनके योगदान को हमेशा याद किया जाएगा, क्योंकि उन्होंने स्वतंत्रता के लिए संघर्ष की भावना को जीवित रखा।

संदर्भ:

1. H. G. Watson, Dehradun: A Gazetteer, Allahabad, 1911, p. 189

2. H. R. Nevill, Saharanpur: A Gazetteer, Allahabad, 1909

3. Dangi Prasad Varun, Uttar Pradesh District Gazetteer: Saharanpur, Lucknow, 1981

4. सुशील भाटी, 1857 की जनक्रांति के जनक धन सिंह कोतवाल, द जर्नल ऑफ मेरठ यूनिवर्सिटी हिस्ट्री एलुमनाई, खंड XII, 2008, पृष्ठ 62–66

5. सुशील भाटी, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अग्रदूत राजा विजय सिंह–कल्याण सिंह, प्रकाशक: अशोक चौधरी, मेरठ, 2002

6. Eric Stokes, Peasant Armed, Oxford, 1986, p. 205

7. Ranajit Guha, Elementary Aspects of Peasant Insurgency in Colonial India, pp. 206, 318